नाथ पंथ

डॉ. प्रदीप कुमार राव

प्रकाशक

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
उत्तर प्रदेश-273009, भारत

प्रकाशक

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
उत्तर प्रदेश-273009, भारत
इ-मेल : mygsg18@gmail.com

सर्वाधिकार

सुरक्षित

संस्करण

प्रथम, 2019

मूल्य

चालीस रुपए

मुद्रक

आर-टेक ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

अनुक्रम

1. नाथ पंथ का अभ्युदय 5
2. नाथ पंथ और योग प्रणेता मत्स्येंद्रनाथ 7
3. महायोगी गोरखनाथ और उनका गोरखपुर 9
4. जहाँ शिष्य भी गुरु को राह दिखाते हैं 11
5. नाथ पंथ ने जन-जन को सुलभ किया योग 15
6. सामाजिक पुनर्जागरण को अभियान बनाया नाथ पंथ ने 17
7. नाथ पंथ ने गढ़ी भक्ति आंदोलन की राह 20
8. कबीर विचार-दर्शन में तो गोरख ही थे 23
9. गोरखबानी में हैं हिंदू-मुसलिम एकता के स्वर 26
10. श्री गोरखपीठ के महंत से मगहर में मिले थे गुरु गोविंद सिंह 29
11. स्वतंत्रता संग्राम के संत सिपाही 31
12. महंत परंपरा में महायोगी गोरखनाथ की अमरता का संदेश 34
13. नेपाल के राजगुरु हैं गोरखनाथ 37

नाथ पंथ का अभ्युदय

भारत का सामाजिक-धार्मिक जीवन अत्यंत समृद्ध है। भारत के सामाजिक-धार्मिक जीवन की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता युग-धर्म के अनुसार स्वयं शुद्धिकरण की है। अर्थात् भारतीय धर्म-संस्कृति दुनिया की ऐसी अद्वितीय धर्म-संस्कृति है, जिसमें काल-प्रवाह के साथ रूढ़िगत पाखंडों एवं कालबाह्य परंपराओं के शुद्धिकरण, युगानुकूल परिवर्तन-परिवर्द्धन की आवाज अनवरत अपने समाज के अंदर से उठती रही है। परिणामत: पुरातन के साथ आधुनिकता का समन्वय होता रहता है और भारतीय संस्कृति की मूलधारा किसी-न-किसी रूप में युगानुकूल होते हुए प्रवाहित होती रही है। पूर्व वैदिक युग का विकास उत्तर वैदिक युग है। तत्पश्चात् तथ्य, प्रमाण, तर्क, दर्शन एवं प्रश्न के साथ उपनिषद् सामने आते हैं और वैदिक युग की अनेक मान्यताओं, परंपराओं, धार्मिक कर्मकांडों को युगानुकूल बनाते हैं, कुछ का खंडन करते हैं तथा कुछ नई दार्शनिक अवस्थापनाओं की प्रतिष्ठा करते हैं। वैदिक संस्कृति पर आधारित औपनिषदिक युग की विकास यात्रा में जब विकृतियाँ रूढ़ हुईं, पाखंड को प्रतिष्ठा मिलने लगी, धार्मिक कर्मकांड एवं यज्ञ दुरुह एवं इतने व्यय साध्य हो गए कि सामान्य जनता के लिए उसका संपादन कठिन हो गया, तो सामान्य जन की आवाज बनकर कपिलवस्तु के शाक्य राजपरिवार के राजकुमार सिद्धार्थ महात्मा बुद्ध के रूप में तथा वज्जिसंघ के युवराज वर्धमान महावीर के रूप में अभ्युदित हुए और बौद्धमत तथा जैनमत के रूप में वैदिक

संस्कृति की मूल-धारा पुनः परिष्कृत होकर आगे बढ़ी। बौद्धमत, जैनमत के साथ-साथ शैव, वैष्णव, शाक्त, पाँचरात्र, कापालिक, पाशुपत इत्यादि विविध धार्मिक मत इस बात के ही प्रमाण हैं कि भारतीय धर्म-संस्कृति में स्वतः शुद्धिकरण हेतु मत-मतांतर को पर्याप्त महत्त्व प्राप्त था और समय-समय पर विविध पांथिक मतों का अभ्युदय तथा उनका उत्थान-पतन स्वाभाविक प्रक्रिया का हिस्सा था। नाथ पंथ का अभ्युदय भी भारतीय संस्कृति की इसी विशिष्टता की देन है।

बौद्धमत एवं समकालीन अन्य विविध धार्मिक पंथों, उपासना-पद्धतियों में विकृतियों तथा पाखंडों को जब प्रतिष्ठा मिलने लगी, भारतीय समाज के वर्ण-जाति के विभाजन में ऊँच-नीच का भाव जन्म लेने लगा तो इनके विरुद्ध दक्षिण भारत से आदि शंकराचार्य तथा उत्तर भारत से महायोगी गोरखनाथ ने सामाजिक पुनर्जागरण का अभियान आरंभ किया। महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ ने पूर्व से प्रचलित नाथ पंथ को पुनर्जीवन देकर नए विचार एवं दर्शन के साथ नवीन स्वरूप में प्रतिष्ठित कर भारतीय समाज को नई दिशा दी। स्पष्ट है कि नाथ पंथ भारतीय संस्कृति की मूल वैदिक धारा में प्रवाहित विविध आध्यात्मिक धाराओं में योग आधारित एक विशिष्ट पांथिक धारा थी, जिसके प्रर्वतक आदिनाथ अर्थात् शिव माने जाते हैं।

आदिनाथ से योग केंद्रित आध्यात्मिक देशना का ज्ञान योगी मत्स्येंद्रनाथ ने प्राप्त किया। मत्स्येंद्रनाथ से योग-विद्या गोरखनाथ ने प्राप्त की तथा गोरखनाथ ने योग-विद्या को अपनी साधना से और अधिक समृद्ध कर इसे भारत के आध्यात्मिक-सामाजिक पुनर्जागरण का आधार बनाया। आदिनाथ, मत्स्येंद्रनाथ तथा गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित यह पंथ इन्हीं योगियों के नामांत के आधार पर नाथ पंथ के नाम से विख्यात हुआ। नाथ पंथ को सिद्धमत, सिद्धमार्ग, योगमार्ग, योग संप्रदाय, अवधूत-मत, अवधूत संप्रदाय इत्यादि नाम से भी जाना जाता है।

□

नाथ पंथ और योग प्रणेता मत्स्येंद्रनाथ

महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ के गुरु श्री मत्स्येंद्रनाथ का उल्लेख पुराण संहिता, तंत्रशास्त्र, स्कंदपुराण, नाथ पंथ के ग्रंथों, कौलज्ञान निर्णय, कश्मीरी शैवागम, तंत्रलोक की टीका, वर्णरत्नांकर तथा तिब्बती-नेपाली अनुश्रुतियों इत्यादि में प्राप्त होता है। नाथ पंथ की परंपरानुसार मत्स्येंद्रनाथ नाथ पंथ के प्रथम आचार्य एवं कश्मीरी कौल संप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं। मत्स्येंद्रनाथ का आविर्भाव पूर्व मध्य युग के एक ऐसे युग संधि-काल में हुआ, जब अनेक आध्यात्मिक साधना के मत प्रवर्तित हो रहे थे। उनमें से कई पर मत्स्येंद्रनाथ का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई देता है।

मत्स्येंद्रनाथ ने तांत्रिक साधना-पद्धति का योग-करण कर शक्ति उपासनापरक योगिनी कौलमत का प्रवर्तन किया। योग साधना में शिव और शक्ति के सामरस्य का सिद्धांत समझाया। इसी शिव-शक्ति के एकाकार दर्शन से कालांतर में शैवदर्शन में शिव के अर्द्धनारीश्वर स्वरूप का विकास हुआ। शिव-शक्ति एक ही प्रतिमा में पूजे जाने लगे। योग दर्शन के प्रकाश में सिद्ध-मत का पोषण किया। मत्स्येंद्रनाथ ने अनात्मवाद के विवर्त में ग्रस्त वैदिक विचार और आध्यात्मिक चिंतन का योग-मार्ग अथवा सिद्ध-मत द्वारा पुनरुद्धार किया तथा आत्मा से परमात्मा का, जीव से शिव का शाश्वत योग सिद्ध किया।

नाथ पंथ के इस आचार्य ने वैदिक युग से चली आ रही योग विद्या को अनुभव-सिद्ध किया। योग को समाजोपयोगी बनाने की दिशा में पहल की। योग के बल पर परकाया प्रवेश जैसे आत्मा के अलौकिक स्वरूप का दर्शन कराया और आत्मा के अस्तित्व को प्रमाणित किया। योग के बल पर जीवन-मरण की गुत्थी को सुलझाने का प्रयत्न किया। योग की अनेक विधाएँ प्रचलित कीं। लोककल्याण एवं लोकमंगल हेतु योग को जन-जन तक पहुँचाने की दृष्टि दी। योग को व्यावहारिक एवं अनुभवजन्य धरातल दिया।

समस्त नेपाल में मत्स्येंद्रनाथ को अप्रतिम सम्मान प्राप्त है। बारह वर्ष के भयंकर अकाल और अनावृष्टि से उत्पीड़ित नेपाल को जलवृष्टि से प्राणान्वित करने का श्रेय उन्हें प्राप्त है। नेपाल नरेश नरेंद्रदेव ने उनकी इस स्मृति को बनाए रखने हेतु ही नेपाल में रथयात्रा एवं महास्नानयात्रा उत्सव प्रारंभ किया, जो अनवरत जारी है। नाथ पंथ के महायोगी मत्स्येंद्रनाथ भारत-नेपाल संबंधों की भी एक मजबूत कड़ी हैं।

साधनात्मक रहस्यवाद के व्यावहारिक व्याख्याता मत्स्येंद्रनाथ ने जीवन में ही जीवन-मुक्त हो जाने की अद्‌भुत शिक्षा दी। अज्ञानांधकार से परम-प्रकाश के चरम पर ले जानेवाले इस महायोगी की पारमार्थिक दक्षता, पारलौकिक कुशलता, लौकिक विलक्षणता तथा लोकमंगलकारी दृष्टि ने योग को सहज-सरल बनाने के उस मार्ग को प्रशस्त किया, जिस पर चलकर गुरु श्री गोरखनाथ ने नाथ पंथ का पुनर्गठन किया और उसे जन-सामान्य का मुक्ति-पथ बना दिया।

□

महायोगी गोरखनाथ और उनका गोरखपुर

हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं—विक्रम संवत की दसवीं शताब्दी में भारतवर्ष के महान् गुरु गोरखनाथ का आविर्भाव हुआ। इतना प्रभावशाली और इतना महिमान्वित महापुरुष भारतवर्ष में दूसरा नहीं हुआ। भक्ति आंदोलन के पूर्व सबसे शक्तिशाली धार्मिक आंदोलन गोरखनाथ का योग-मार्ग ही था। भारतवर्ष की ऐसी कोई भाषा नहीं है, जिसमें गोरखनाथ संबंधी कहानियाँ न पाई जाती हों। गोरखनाथ अपने युग के सबसे महान् धर्मनेता थे। उन्होंने जिस धातु को छुआ, वही सोना हो गया।

महायोगी गोरखनाथ की संगठन-शक्ति अपूर्व थी। उनका चरित्र स्फटिक के समान उज्ज्वल, बुद्धि भावावेश से एकदम अनाविल और कुशाग्र-तीव्र थी। गोरखनाथ ने निर्मम हथौड़े की चोट से साधु और गृहस्थ, दोनों की कुरीतियों को चूर्ण-विचूर्ण कर दिया। लोक जीवन में जो धार्मिक चेतना अपने परमार्थिक उद्देश्य से विमुख हो रही थी, उसे गोरखनाथ ने नई प्राणशक्ति से अनुप्राणित किया। हर प्रकार की रूढ़ि पर चोट की, उन्होंने किसी से भी समझौता नहीं किया, लोक से भी नहीं, वेद से भी नहीं, परंतु फिर भी उन्होंने समस्त प्रचलित साधना मार्ग से उचित भाव ग्रहण किया।

कहा जाता है कि ज्वाला देवी के मंदिर से खिचड़ी माँगने निकले

गोरखनाथ का मन अचिरावती (राप्ती) के तट पर सुरम्य वन क्षेत्र में आकर ठहर गया और यहीं वे तपस्यारत हो गए। उन्हीं के नाम पर वर्तमान गोरखपुर नगर बसा। उसी तपस्थली पर आज श्री गोरखनाथ मंदिर के गगनचुंबी शिखर उस महायोगी के विराट् व्यक्तित्व की उपस्थिति का एहसास कराते हैं। अखंड धूना एवं अखंडदीप आज भी गोरखनाथ की योग-साधना की अमरता का संदेश दे रहे हैं।

मत्स्येंद्रनाथ से योग-दर्शन का ज्ञान प्राप्त कर गोरखनाथ ने नाथ पंथ को अनेक नए आयाम के साथ पुनर्जीवन प्रदान किया। एक प्रकार से नाथ पंथ की प्रभावी नींव डाली और योगियों के साथ-साथ जन-सामान्य को दु:ख से मुक्ति का वह मार्ग दिखाया, जो सहज था, सरल था, सुगम था, सर्वस्पर्शी था, सर्वसुलभ था एवं बोधगम्य था। ऐसी वैचारिक क्रांति का सूत्रपात किया, जिस पर एक तरफ जहाँ मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन जैसी प्रभावशाली धार्मिक-सामाजिक क्रांति ने जन्म लिया तो दूसरी तरफ असंभव माने जानेवाले हिंदू-मुसलिम एकता की प्रबल धारा के रूप में सूफीमत के एक नए संस्करण का जन्म हुआ। भारत के सामाजिक जीवन में व्याप्त ऊँच-नीच, छुआ-छूत, जाति-पाँति विभेद सहित सभी सामाजिक-धार्मिक रूढ़ियों के विरुद्ध गोरखनाथ तनकर खड़े हुए। लौकिक-पारलौकिक जीवन में स्वस्थ रहने से लेकर मुक्ति पाने तक के सर्व-सुलभ मार्ग के रूप में 'योग' को प्रतिष्ठित करनेवाले गोरखनाथ ने भारत के सामाजिक-धार्मिक जीवन को ऐसा रास्ता दिखाया, जिस पर पाखंड एवं आडंबर जगह ही नहीं पा सकते। महायोगी गोरखनाथ प्रवर्तित योग मार्ग व्यक्ति, समाज, धर्म, राष्ट्र को एकाकार स्वरूप में ग्रहण करता है और सबको साथ लेकर चलने का हिमायती है। गोरखनाथ की तपस्थली श्री गोरखनाथ मंदिर एवं महायोगी गोरखनाथ के प्रतिनिधिस्वरूप श्री गोरक्षपीठाधीश्वरों की अद्यतन परंपरा में आज भी यह प्रमाणित तथ्य है।

□

जहाँ शिष्य भी गुरु को राह दिखाते हैं

गुरु-शिष्य परंपरा भारतीय संस्कृति की विशिष्टता है। प्राचीन काल में ज्ञान परंपरा मौखिक होने के कारण गुरु-शिष्य परंपरा का अति महत्त्व था। भारत की सभी ज्ञान-परंपराओं में गुरु-शिष्य परंपरा प्रतिष्ठित हुई। नाथ पंथ में भी गुरु-शिष्य परंपरा का अभ्युदय इसी स्वाभाविक प्रक्रिया का हिस्सा था, किंतु योग-प्रधान इस आध्यात्मिक पांथिक परंपरा में गुरु का महत्त्व बढ़ता गया। महायोगी मत्स्येंद्रनाथ एवं गुरु श्री गोरखनाथ क्रियात्मक योग के प्रणेता हैं। नाथ पंथ के योगियों ने योग को व्यावहारिक धरातल प्रदान किया। योग को सीखने में सिद्धांत से अधिक व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रभावी है। अनुभव युक्त सिद्धांत पढ़कर अभ्यास में उतारना अत्यंत कठिन है। नाथ पंथ सिद्ध-मत है, योग-मत है। नाथ पंथ में योगी योगाभ्यास गुरु से सीखते हैं।

गोरखनाथजी का स्पष्ट मत है कि बिना गुरु के स्वरूप-ज्ञान नहीं हो सकता है।

गुरु कीजै गहिला निगुरा न रहिला।
गुरु बिन ग्यान पायला रे भाईला॥

—गोरखबानी-34

गोरखनाथजी आगे कहते हैं कि यह संसार आनंदमय है, क्योंकि

सच्चिदानंदस्वरूप परब्रह्म परमात्मा, परमशिव सौंदर्यसार-सर्वस्व है, उनकी दिव्यता, माधुर्य और ऐश्वर्य की रसानुभूति योगसिद्ध सद्गुरु की कृपा से ही संभव है। यथा—

बास सहेती सब जग बास्या, स्वाद सहेता मीठा।
साच कहूँ तौ सदगुर मानै रूप सहेता दीठा॥

—गोरखबानी-25

महायोगी मत्स्येंद्रनाथ एवं गुरु श्री गोरखनाथ से गुरु-शिष्य की अद्वितीय परंपरा अनवरत बनी हुई है। नाथ पंथ में महायोगी गोरखनाथ ने अपने गुरु मत्स्येंद्रनाथ को कदली वन के माया-जाल से मुक्त कराया था। गोरखनाथ का 'जाग मछंदर गोरख आया' संदेश आज भी नाथ पंथ की गुरु एवं शिष्य परंपरा का अद्वितीय उदाहरण है, जहाँ शिष्य ने गुरु को राह दिखाई। नाथ पंथ की गुरु-शिष्य परंपरा में आज भी यह देखा जाता है कि गुरु भी अपने शिष्य को ध्यान से सुनता है, गुनता है और उसका सच सहर्ष स्वीकार करता है।

महायोगी गोरखनाथ की तपस्थली श्री गोरखनाथ मंदिर की महंत परंपरा नाथ पंथ की गुरु-शिष्य परंपरा का अद्यतन प्रतिनिधित्व करती है। श्री गोरखनाथ मंदिर की गुरु-शिष्य परंपरा में स्पष्टत: प्रतिबिंबित होता है कि यहाँ गुरु-शिष्य संबंध मात्र ज्ञान-प्राप्ति व योगाभ्यास तक सीमित नहीं है, अपितु इसका फलक व्यापक और विस्तृत है। यहाँ की गुरु-शिष्य परंपरा में पिता-पुत्र के पवित्र रिश्तों की भी महक व्याप्त है। योगीराज बाबा गंभीरनाथजी, महंत ब्रह्मनाथजी, महंत दिग्विजयनाथजी, महंत अवेद्यनाथजी से लेकर महंत योगी आदित्यनाथजी (वर्तमान माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश) तक की क्रमश: सवा सौ वर्षों की गुरु-शिष्य परंपरा, जिनके हम प्रत्यक्षदर्शी हैं, अद्भुत और अद्वितीय है।

योगीराज बाबा गंभीरनाथ ने अपने शिष्य ब्रह्मनाथजी को नाथ पंथ एवं योग की दीक्षा दी। योगीराज बाबा गंभीरनाथजी एवं महंत ब्रह्मनाथजी की संयुक्त परवरिश से महंत दिग्विजयनाथजी 6 वर्ष के बालक नान्हू सिंह के

रूप में गढ़े गए और ब्रह्मनाथजी ने गोरखनाथ मंदिर का उन्हें महंत बनाया। महंत दिग्विजयनाथजी ने अवेद्यनाथ जी को सन् 1942 में अपना शिष्य बनाया तथा लगभग 27 वर्षों तक अपने साथ रखकर उन्हें नाथ पंथ की दीक्षा दी और गोरखनाथ मंदिर का महंत बना दिया। महंत अवेद्यनाथजी ने सन् 1993 में योगी आदित्यनाथजी को अपना शिष्य बनाया, सन् 1994 में नाथ पंथ की दीक्षा दी, अपना उत्तराधिकारी बनाया और क्रमश: अपनी पूरी सत्ता उन्हें सौंप दी। इस गुरु-शिष्य परंपरा में गुरु का प्यार, गुरु का समर्पण, गुरु का मार्गदर्शन और क्रमश: अपनी परंपरा का पूर्णत: हस्तांतरण अद्वितीय है। इसी प्रकार शिष्य का गुरु के प्रति श्रद्धा, समर्पण, त्याग और तप का अकथनीय उदाहरण श्री गोरखनाथ मंदिर की गुरु-शिष्य परंपरा में पुष्पित और पल्लवित है।

हमने ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथजी महाराज एवं महंत आदित्यनाथजी महाराज के आपसी गुरु-शिष्य संबंध को नजदीक से देखा है। हर आनेवाले नाथपंथ के योगी, श्री गोरखनाथ मंदिर के परंपरागत भक्तों एवं श्रद्धालुओं से बड़े महाराजजी (महंत अवेद्यनाथजी) यह पूछना नहीं भूलते थे कि छोटे बाबा (तब के उत्तराधिकारी योगी आदित्यनाथजी महाराज) से मिले? उत्तर नहीं होने पर, छोटे बाबा से मिलकर जाने के आदेश के साथ विदा करना बड़े महाराज के स्वभाव का हिस्सा था। प्रतिदिन सायं या रात्रि छोटे महाराजजी के समय से न आने पर बड़े महाराजजी की बेचैनी हमने देखी है। इसी प्रकार छोटे महाराजजी प्रात: कहीं भी जाने से पूर्व बड़े महाराज का आदेश लेना नहीं भूलते और सायं या रात्रि में आने पर सबसे पहले बड़े महाराज से मिलना उनके व्यवहार का अनिवार्य हिस्सा था। सामान्यत: रात्रि 7-8 बजे वापस मंदिर आने के बाद रात्रि नौ-साढ़े नौ बजे तक बड़े महाराज की शरण में बैठकर दिनभर की गतिविधियों की जानकारी देना, देश-समाज के बारे में बातचीत छोटे महाराजजी की दिनचर्या का अनिवार्य हिस्सा रहा है। बड़े महाराजजी के थोड़े से अस्वस्थ होने पर छोटे महाराज की छटपटाहट, उन्हें स्वस्थ करने के प्रयत्न की तीव्रता का साक्षी श्री गोरखनाथ मंदिर आने-

जानेवाले एवं वहाँ के भक्त सभी रहे हैं। गुरु-शिष्य के अद्वितीय, अद्‌भुत एवं अकथनीय संबंध से प्रेरणा लेने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ। बड़े महाराज एवं छोटे महाराज के संबंधों की अभिव्यक्ति शब्द से परे है। उन्हें केवल महसूस किया जा सकता है।

नाथ पंथ की यह श्रेष्ठ परंपरा भारतीय समाज में गुरु-शिष्य के लिए, पिता-पुत्र के लिए अनुकरणीय है। यह एक ऐसा प्रकाशदीप है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी सामाजिक संबंधों को भी रास्ता दिखाता है। गोरखनाथ मंदिर की, या यों कहे नाथ पंथ की गुरु-शिष्य परंपरा का सामाजिक विस्तार युग की माँग है। भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य एवं पिता-पुत्र के पवित्र संबंधों का दर्पण है नाथ पंथ की यह गुरु-शिष्य परंपरा।

□

नाथ पंथ ने जन-जन को सुलभ किया योग

दुनिया को योग भारत की देन है। निरोगी काया एवं आनंदचित् मानस के लिए योग रामबाण है, अचूक नुस्खा है। वैदिक युग से श्रमण-तपस्वी विचारधारा में योग का आरंभिक स्वरूप प्राप्त होता है। इस वैचारिक धारा को सिद्धांत रूप में पतंजलि ने प्रतिपादित किया और महायोगी गोरखनाथ ने इसके क्रियात्मक स्वरूप को जन-सम्मुख प्रस्तुत किया। वास्तव में योग को आम-जन तक नाथ पंथ ने ही पहुँचाया। इससे पूर्व योग ऋषियों-मुनियों-तपस्वियों की साधना तक मात्र उनके आश्रमों-गुफाओं में ही सीमित था।

पूर्व मध्य युग में उपासना पद्धति में पाखंड-आडंबर के बढ़ते प्रभाव, धर्म-पंथ-मजहब में ऊँच-नीच एवं भेदभाव के आधार पर निषेधात्मक प्रवृत्तियों के विकास, तांत्रिक उपासना पद्धति में मांस-मदिरा-मैथुन जैसी विकृतियों के रूढ़ होते जाने को एक झटके में नाथ पंथ के इस महायोगी ने योग को ब्रह्मास्त्र बनाकर रोक दिया। स्वस्थ एवं आध्यात्मिक जीवन को एक ऐसा मार्ग दिया, जिस पर न कोई भेदभाव था, न कोई बड़ा-छोटा था और न कोई ऊँच-नीच था। मोक्ष अथवा मुक्ति का यह ऐसा मार्ग था, जिस पर हर कोई स्वस्थ एवं निरोग रहते चल सकता था और जिस पथ पर दान-दक्षिणा का कोई खर्च नहीं, पूजा-पाठ का पाखंड नहीं, यज्ञादि में पुरोहितों अथवा पुजारियों का अत्यधिक

व्यय-साध्य तमाशा नहीं, बस, तन-मन के विज्ञान की साधना थी। नाथ पंथ का योग-मार्ग एक ऐसी साधना पद्धति थी, जो अमीर-गरीब, नर-नारी, देशी-विदेशी—सभी के लिए सर्वसुलभ थी। नाथ पंथ के योगियों ने इस योग-मार्ग को सिद्धों की गुफाओं से निकालकर अट्टालिकाओं से लेकर झोंपड़ी तक पहुँचा दिया। धर्म-उपासना पर पाखंडी विशेषाधिकार को उखाड़कर फेंक दिया।

नाथ पंथी योगियों की योग-विद्या की इस आँधी में सदियों से आ रही उपासना पद्धतियों की जटिलताएँ चकनाचूर हो गईं। वैदिक संस्कृति अर्थात् हिंदुत्व अर्थात् मानव-धर्म मौलिक रूप में साकार हो उठा। योग के माध्यम से समाज में आध्यात्मिक मानस के विकास के साथ-साथ सदाचार-नैतिकता-करुणा-सेवा-समर्पण जैसे शाश्वत जीवन-मूल्य एक बार फिर निखरकर स्वीकृत हुए। योग को आध्यात्मिक-जनांदोलन बनाने का श्रेय नाथ पंथ के योगियों को ही है।

योग में नाथ पंथ के प्रथम दो आचार्य, महायोगी मत्स्येंद्रनाथ एवं गुरु श्री गोरखनाथ के नाम पर मत्स्येंद्रासन एवं गोरक्षासन के नाम से योगासन प्रचलित हैं। नाथ पंथ के योगियों ने प्रमाणित किया कि योग शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक अनुशासन की ऐसी पद्धति है, जिसके द्वारा मन एवं शरीर पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित किया जा सकता है। नाथ पंथी योग साधना के बल पर व्यक्ति न केवल अपनी मानसिक एवं शारीरिक क्रियाओं पर नियंत्रण स्थापित कर सकता है अपितु इंद्रियेत्तर ज्ञान की उपलब्धि तथा प्रकृति के क्रिया-कलापों पर आध्यात्मिक अंकुश लगा सकता है। योगीराज बाबा गंभीरनाथजी का मानना था कि योग-साधना का अंतिम लक्ष्य प्रकृति मात्र पर नियंत्रण करना नहीं है, अपितु योग तथा योगी का अंतिम लक्ष्य प्रकृति के क्षेत्र का अतिक्रमण करते हुए सीमातीत, दु:खातीत, बंधनातीत, अहंकारशून्य, आत्मप्रकाशित, आत्मतत्त्व की अनुभूति करना अथवा कराना है। स्पष्ट है कि महंत अवेद्यनाथजी ने भी अपना प्राण-तत्त्व इसी योग के बल पर रोके रखा तथा श्री गोरखपीठ में पहुँचकर ही मुक्त हुए।

□

सामाजिक पुनर्जागरण को अभियान बनाया नाथ पंथ ने

महात्मा बुद्ध के बाद भारत में सामाजिक पुनर्जागरण का शंखनाद महायोगी गोरखनाथ ने किया। महायोगी गोरखनाथ ऐतिहासिक युग में भारतीय इतिहास के पहले तपस्वी हैं, जिन्होंने विशुद्ध योगी एवं तपस्वी होते हुए भी सामाजिक-राष्ट्रीय चेतना का नेतृत्त्व किया। उन्होंने नाथ पंथ का पुनर्गठन ही सामाजिक पुनर्जागरण के लिए किया। पारलौकिक जीवन के साथ-साथ भौतिक जीवन का सामंजस्य बिठाने वाले इस महायोगी ने भारतीय समाज में सदाचार, नैतिकता, समानता एवं स्वतंत्रता की वह लौ प्रज्वलित की, जिसकी लपटें जाति-पाँति, ऊँच-नीच, छुआछूत, भेदभाव, अमीरी-गरीबी, पुरुष-स्त्री जैसी विषमताओं तथा क्षेत्रीयतावाद जैसी प्रवृत्तियों को निरंतर जलाती रहीं। नाथ पंथ के विचार-दर्शन ने एक ऐसी योगी-परंपरा को जन्म दिया, जिसने भारतीय संस्कृति के एकाकार सामाजिक चिंतन की प्रतिष्ठा को ही अपना मिशन बना दिया।

महायोगी गोरखनाथजी से लेकर महंत अवेद्यनाथजी से होते हुए महंत योगी आदित्यनाथजी तक नाथ पंथ की इस योगी-परंपरा ने हर प्रकार की सामाजिक बुराइयों का खुलकर प्रतिकार किया। महायोगी गोरखनाथ ने वर्ण-व्यवस्था अथवा जाति-व्यवस्था के श्रेष्ठतावादी सिद्धांत को चुनौती दी एवं

सभी वर्णों एवं जातियों को एक समान घोषित किया। महंत अवेद्यनाथजी इस परंपरा के आधुनिक अद्यतन ब्रह्मलीन धर्म-गुरु थे। उनका पूरा जीवन जाति व्यवस्था में छुआछूत एवं ऊँच-नीच के खिलाफ संघर्ष करते बीता। उन्होंने गाँव-गाँव में सहभोज, हिंदू समाज में तथाकथित अछूत माने जानेवाले दलितों के साथ स्वयं तथा सबको बैठाकर भोजन करने का अभियान तब चलाया, जब भारतीय समाज में जातिवादी प्रवृत्तियाँ सामाजिक-विखंडन की ओर तेजी से बढ़ रही थीं। सभी राजनीतिक दल अपने-अपने वोट बैंक की चिंता में सच बोलने तक का साहस नहीं कर पा रहे थे। संत-महात्मा शास्त्रीय परंपरा की दुहाई देकर मौन थे।

पटना रेलवे स्टेशन के सामने श्री हनुमान मंदिर को स्थापित करनेवाले एक महात्मा को दलित होने के कारण उस मंदिर के महंत की स्वीकार्यता नहीं मिल पा रही थी। महंत अवेद्यनाथजी ने नाथ पंथ की सामाजिक समरसता का शंखनाद करते हुए वहाँ स्वयं जाकर उस महात्मा को महंत पद पर अभिषिक्त किया और सामाजिक स्वीकार्यता दिलाई। वाराणसी में अछूत माने जानेवाले डोम राजा के घर जाकर न केवल स्वयं भोजन किया अपितु अपने साथ बड़ी संख्या में साधु-समाज को भी भोजन कराया। श्रीराम जन्म-भूमि पर भव्य मंदिर के शिलान्यास की पहली ईंट कोई तथाकथित 'अछूत' रखे, यह प्रस्ताव दिया, प्रस्ताव स्वीकृत कराया और दुनिया को बता दिया कि भारतीय समाज में छुआछूत एवं ऊँच-नीच की कुप्रवृत्तियों के दिन लद चुके हैं।

नाथ पंथ की परंपरा में दुनिया के सर्वोच्च नाथ पंथी केंद्र गोरखनाथ मंदिर के कपाट हमेशा सभी के लिए खुले रहते है। श्री गोरखपीठ के भंडारे का चौखट हर भूखा बिना किसी भेदभाव एवं पूछ-ताछ के साथ पार करता है और एक साथ भोजन रूपी प्रसाद प्राप्त करता है। गोरखपीठ के सभी महंत बिना किसी भेदभाव के समाज में सभी के यहाँ सभी के साथ पानी पीते हैं, भोजन करते हैं तथा अपने भंडारे में भी सभी के साथ भोजन प्रसाद ग्रहण करते हैं। यह अनवरत चलनेवाले नाथ पंथी सामाजिक पुनर्जागरण का ही प्रभाव एवं

परिणाम है कि नाथ पंथी योगियों में भारतीय समाज के सभी वर्गों–जातियों के लोग दीक्षित हैं।

नाथ पंथ के सामाजिक पुनर्जागरण का अहर्निश गतिमान रथ का पहिया निरंतर चल रहा है। वर्तमान महंत योगी आदित्यनाथजी गरीबों, असहायों, पीड़ितों, दलितों के अत्यंत प्रिय धर्मनेता भी हैं और जननेता भी हैं। नाथ पंथ का यह योगी जब उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य के मुख्यमंत्री पद की शपथ ले रहा था तो दुनिया के राजनीतिक पंडित नाथ पंथ की सामाजिक–पुनर्जागरण की भूमिका से अनभिज्ञ होने के कारण ही आश्चर्य चकित थे। वे यह समझ नहीं पा रहे थे कि एक भगवाधारी संत 'सबका साथ–सबका विकास' मंत्र में कैसे फिट हुआ, किंतु नाथ पंथ के सामाजिक–पुनर्जागरण अभियान के जानकार भारतीय राजनीति की यह करवट लेना बखूबी समझ रहे थे।

□

नाथ पंथ ने गढ़ी भक्ति आंदोलन की राह

भक्तिवाद के पूर्व नि:संदेह यह (नाथ पंथ) सबसे प्रबल मतवाद था। इसीलिए भक्तिवाद में इनके शब्द और मुहावरे ही नहीं, इनकी पद्धति भी बहुत कुछ आ गई।

—हजारी प्रसाद द्विवेदी

संतों की 'साखियों' तथा 'बानियों' के पूर्वरूप हमें नाथ पंथियों की 'सबदियों' तथा 'जोगेसुरी' बानियों में दीख पड़ते हैं, जिनके विषय लगभग एक ही ढंग के हैं।

—परशुराम चतुर्वेदी

भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करनेवाले मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन की राह नाथ पंथ के योगियों ने गढ़ी। कबीर, सूर, तुलसी से लेकर मीराबाई तक की भक्ति-धारा का प्रवाह नाथ पंथ की वैचारिकी एवं योग के क्रियात्मक स्वरूप से प्रस्फुटित हुआ था। यद्यपि भक्ति आंदोलन में सबकुछ नाथ पंथ जैसा ही नहीं था, तथापि नाथ पंथी ज्ञान और योग की साधना से ही भक्ति का स्वर फूटा। भक्ति की उत्पत्ति योग की

भूमि में ही संभव हुई। समस्त मध्यकालीन भक्ति-साहित्य महायोगी गोरखनाथ एवं नाथ पंथ की साहित्यिक चेतना से प्रतिबिंबित हैं। मध्यकालीन कोई भी ऐसा संत कवि नहीं, जो मन की एकाग्रता विषयक प्रसंग में गुरु गोरखनाथ का स्मरण न करता हो। वह सगुण हो या निर्गुण, कृष्ण काव्य हो या रामकाव्य, सूफ़ी की प्रेम रस-साधना हो या निर्गुणियों का ज्ञानमार्ग हो, सर्वत्र गोरखनाथ अपने योग दर्शन के रूप में उपस्थित हैं।

महायोगी गोरखनाथ सर्वसमाज के नेता और पथ-प्रदर्शक थे। वे भूमिजात और दलित, शासक और शासित, संपन्न और विपन्न—सबके गुरु थे। नेपाल, तिब्बत, म्याँमार, भूटान के साथ-साथ पश्चिमोत्तर में हिंदुकुश की पहाड़ियों से लेकर पूर्व में समुद्र तक समस्त भू-भाग पर राजवंशों से लेकर अछूत और अंत्यज कहे जानेवाले वर्ग की झोपड़ियों तक गोरखनाथ का डंका बजा। महायोगी गोरखनाथ के योगदर्शन ने अपने समकालीन भक्तिमार्गी संतों की धारा मोड़ दी। उनके योग के प्रभाव के आगे शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, माधवाचार्य, रामानंदाचार्य आदि आचार्यों की भक्ति-धारा धूमिल पड़ गई थी। यदि ऐसा न होता तो तुलसीदास को यह स्वीकारोक्ति न करनी पड़ती कि—'गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग'। कबीरदास, सुंदरदास, मलूकदास, निरंजनी संप्रदाय के संत हरिदास, दुःखहरन दास जैसे संतों ने गुरु गोरखनाथ के प्रति जगह-जगह पर श्रद्धा प्रकट की है। सूरदास सहित सभी कृष्ण भक्त कवियों को महायोगी गोरखनाथ के योग-प्रभाव के कारण ही उद्धव और गोपियों में संवाद के माध्यम से योग तथा भक्ति को अपने गीतों, कविताओं का आधार बनाना पड़ा। दादूपंथी संतों की वाणियों के संग्रह ग्रंथ 'सर्वंगी' में गोरखनाथ, भरथरी, चर्पटनाथ और गोपीनाथ की बानियाँ भी संगृहीत हैं। अघोरपंथ को तो नाथ पंथ की ही एक शाखा के रूप में देखा जाता है।

नाथ पंथ में गुरु का अन्यतम् स्थान है। नाथ पंथ में प्रतिष्ठित यह गुरु महिमा भक्ति-आंदोलन के संतों, भक्तों ने भी यथावत् स्वीकार की। कबीर ने गुरु को गोविंद से बड़ा कहा और तुलसीदास ने उन्हें आँखों में ज्योति देनेवाला बताया। नाथ योगियों द्वारा शिव, शक्ति, विष्णु तथा उनके सभी अवतार पूजे

जाते हैं। वस्तुत: गुरु महिमा, ईश्वर उपासना के साथ-साथ नाथ पंथी योगियों द्वारा चरित्र की पवित्रता, इंद्रिय संयम, हृदय की सच्चाई और फक्कड़पन की मूल आधारशिला पर भक्ति आंदोलन का भवन खड़ा हुआ।

नाथ पंथ ने निडर, समरस और सुखी समाज की रचना को लक्ष्य बनाया। आत्मतत्त्व के बोध से सात्त्विक, आध्यात्मिक जीवन को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया। सर्व समाज को सज्जन, संतोषी, संयमी, स्नेहशील, अपरिग्रह और समभाव युक्त होने का उपदेश दिया। नाथ पंथ का जादू सिर चढ़कर बोला और कबीर, नानक, दादू, मलूक, दरिया साहब, असमी के माधव कंदली, उड़िया के बलरामदास तथा बंगाली के कृतिवास की रचनाओं में नाथ पंथ की प्रतिध्वनि सुनाई पड़ने लगी। वही साधना, वही शब्दावली, वही सात्त्विक-नैतिक जीवनादर्श संत-काल की पूरी परंपरा में दिखाई पड़ता है। कबीर से मीरा तक की संत-परंपरा नाथ पंथ से प्रभावित है। महाराष्ट्र का वारकरी संप्रदाय अपना मूल नाथ पंथ के आदिनाथ से मानता है। मुकुंदराज और ज्ञानेश्वर अपने को आदिनाथ से जोड़ते हैं। संत नामदेव भी नाथ योग से प्रभावित हैं। तमिल सिद्ध कवियों के सिद्धांत नाथसिद्धों से मिलते-जुलते हैं। कन्नड़ का मध्यकालीन साहित्य नाथ योग से प्रभावित है। यह परंपरा गोरखनाथ को कर्नाटक का ही मानती है। मलयालम में मध्यकालीन भक्ति साहित्य को नाथ पंथ ने बहुत गहरे जाकर प्रभावित किया है। मलयालम के महान् कवि मध्यकालीन आचार्य तुन्तच्चु एवुत्तच्छन (1526ई.) की तीन प्रतिष्ठित रचनाओं 'महाभारत', 'श्रीमद्भागवत्' तथा 'चिंतारत्न' में स्थान-स्थान पर नाथ योग के तत्त्व लक्षित होते हैं। उड़िया एवं बाँग्ला में भी नाथ साहित्य की रचना प्रचुर मात्रा में हुई है। संपूर्ण संत साहित्य पर नाथ पंथी योगियों का जबरदस्त प्रभाव दिखता है। नाथ पंथ ने भक्ति आंदोलन के आध्यात्मिक चिंतन को प्रभावित किया। नाथमत एवं संतमत एक ही सांस्कृतिक प्रवाह की पूर्ववर्ती एवं परवर्ती कड़ियाँ हैं।

□

कबीर विचार-दर्शन में तो गोरख ही थे

कबीर आदि निर्गुण मतवादी संतों की वाणियों की बाहरी रूप-रेखा पर विचार किया जाए तो मालूम होगा कि बौद्धधर्म के अंतिम सिद्धों और नाथ पंथी योगियों के पदादि से उसका सीधा संबंध है। वे ही पद, वे ही राग-रागिनियाँ, वे ही दोहे तथा वे ही चौपाइयाँ कबीर आदि ने व्यवहार की हैं, जो उक्त मत (नाथ पंथ) को माननेवालों के पूर्ववर्ती संतों ने की थीं। क्या भाव, क्या भाषा, क्या अलंकार, क्या छंद तथा क्या पारिभाषिक शब्द—सर्वत्र वे ही कबीरदास के मार्गदर्शक हैं।

—हजारी प्रसाद द्विवेदी

नाथ पंथ के प्रवर्तक महायोगी गोरखनाथ और मध्ययुगीन महान् संत कबीरदास को एक साथ पढ़नेवाले जानते हैं कि दोनों के विचार, दर्शन और रचनाएँ एक-दूसरे से ऐसी गुँथी हुई हैं, मानो पूरक हों। यह कहना अत्युक्ति नहीं है कि विचार में कबीर गोरखनाथ के ही मध्ययुगीन संस्करण हैं। कबीर भी गोरखनाथ को स्वीकारते हैं। कबीर स्वयं लिखते हैं—

गोरखनाथ न मुद्रा पहिरी मस्तक नहीं मुड़ाया।
ऐसा भगत भया भू उपरि गुरु पैं राज छुड़ाया॥

संत कबीर तथा उनके परवर्ती अन्य संतों की बानियों में ऐसी अनेक बातें

हैं, जो नाथ पंथ में पूर्व से थीं। गोरखनाथ की भाँति कबीर ने भी शुद्ध आचरण पर बल दिया। गोरखनाथ की तरह ही कबीर मन की शुद्धि को साधना हेतु आवश्यक मानते हैं। विशेषत: गुरु के महत्त्व, साधना-पद्धति, तत्त्वचिंतन, रहस्यानुभूति, नैतिक और सामाजिक मूल्य तथा भाषा-शैली में गोरखनाथ एवं कबीर में अद्‌भुत साम्य है। कबीर ने भी नाथ योगियों की भाँति मुक्तक शैली का प्रयोग किया है। गोरख एवं कबीर, दोनों में चोट करनेवाली शब्दावली प्रयुक्त है। उलटवासियों की रचना नाथ-योगियों की ही हैं, जिसे कबीर आगे बढ़ाते हैं। कबीर की कई उलटवासियाँ ठीक उसी प्रकार की हैं, जिस प्रकार गोरखनाथ की हैं। प्रतीक शैली का प्रयोग नाथ पंथी योगियों की तरह ही कबीर ने भी किया है। अनेक स्थलों पर गोरखनाथ और कबीर के कथनों में गजब का साम्य है।

उदाहरण देखें—

हिंदू आशैं राम कौं मुसलमान खुदाई।
जोगी आशैं अलख कौं, तहाँ राम अछै न खुदाई॥

—गोरखनाथ

हिंदू मूये राम कहि मुसलमान खुदाई।
कहैं कबीर सो जीवता, दुई में कदे न जाई॥

—कबीर

सामाजिक रूढ़ियों-विकृतियों के खिलाफ कबीर महायोगी गोरखनाथ की तरह ही तनकर खड़े हुए। हर सामाजिक विकृतियों पर कबीर ने करारी चोट की। पाखंड और आडंबर के खिलाफ खुलकर बोले। महायोगी गोरखनाथ ने जिस प्रकार भारत में जाति व्यवस्था की विकृतियों की खिलाफत की, उसी प्रकार कबीर यह कहते दिखते हैं कि जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान। काशी में मुक्ति के खिलाफ कबीर ने महायोगी गोरखनाथ की तपस्थली से सटे मगहर को अपनी मुक्ति का स्थान चुना। बाहरी धर्माचारों को

अस्वीकार कर अपार साहस लेकर गोरख की तरह ही कबीर साधना के क्षेत्र में अवतीर्ण हुए।

स्पष्ट है कि महायोगी गोरखनाथ ने जिस वैचारिक धरातल पर नाथ पंथ को खड़ा किया, आगे चलकर कबीर उसी वैचारिक धरातल पर खड़े दिखाई देते हैं। नाथ पंथ द्वारा सामाजिक कुरीतियों-विकृतियों के खिलाफ जो आवाज उठाई गई, कबीर ने उसी सुर में सुर मिलाया। नाथ पंथ और कबीरपंथ की इन समानताओं से यह साफ हो जाता है कि कबीर नाथ पंथ से अतिशय प्रभावित थे। नाथ पंथ की योग-साधना पूर्णत: साध न पाने के कारण कबीर एवं उनका पंथ नाथ पंथ से भिन्न दिखता है।

□

गोरखबानी में हैं हिंदू-मुसलिम एकता के स्वर

महायोगी गोरखनाथ के नाथ पंथ का विस्तार बहुत था। इस हिंदू योगी के नाथ पंथ का द्वार हिंदू हो या मुसलमान, सभी के लिए खुला था। नाथ पंथ के योगी सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अपना योग और सामाजिक समरसता का मंत्र लेकर हर द्वार पर गए, चाहे वह द्वार किसी भी महजब को माननेवाले का हो, किसी विचार-दर्शन स्वीकार करनेवाले का हो, किसी भी उपासना पद्धति को जीनेवालों का हो। गोरखनाथ ने हिंदुओं के साथ-साथ इसलामी समाज को भी रूढ़ियों-कुरीतियों के विरुद्ध तनकर खड़ा होने का उपदेश दिया। योग की जीवन-धारा पर चलकर मुहम्मद साहब के उपदेशों को सही संदर्भों में समझने का संदेश दिया। महायोगी गोरखनाथ के यही उपदेश एवं संदेश आगे चलकर कबीर-रहीम देते हुए दिखाई देते हैं।

'गोरखबानी' में नाथ पंथ के प्रवर्तक महायोगी गोरखनाथ कहते हैं—हे काजी! परमात्मा के संदेशवाहक रसूल मुहम्मद साहब के विचार बड़े ही निगूढ़ और रहस्यपूर्ण थे। उनके पवित्र शब्दों का रहस्य अत्यंत मार्मिक है। मुहम्मद साहब ने तो भगवत् प्रेम का मार्ग प्रशस्त किया, उन्होंने जीव-हिंसा का प्रतिपादन नहीं किया। उनके हाथ में जो छूरी (शस्त्र) थी, वह लोहे या इस्पात की बनी हुई नहीं थी, वह तो प्रेम से निर्मित दिव्य शब्दों की शक्ति थी—

महमंद महमंद न करि काजी महमंद का विषम विचारं।
महमंद हाथि करद जे होती लोहै घड़ी न सारं॥

गोरखनाथ आगे कहते हैं कि हे काजी! इसलाम के प्रवर्तक मुहम्मद साहब ने अपने शब्दों में शुद्ध अध्यात्म का प्रतिपादन किया। उनके आध्यात्मिक दिव्य सदुपदेशों से जीवात्मा की भौतिक एवं मायिक आसक्ति का नाश होता है तथा आत्म-शक्ति प्राप्त होती है। सदुपदेश अथवा शब्द की ओट लेकर स्थूल बुद्धि से उनकी नकल करने से उद्देश्य सिद्ध नहीं होगा। तुम्हारे तो शरीर में वह बल नहीं है, जो आध्यात्मिक बल कहा गया है और जो मुहम्मद साहब को सहज प्राप्त था।

सबदै मारी सबदँ जिलाई ऐसा महमंद पीरं।
ताकै भरम न भूलौ काजी सो बल नहीं सरीरं॥

गोरखनाथ ने नाथ पंथी योगियों एवं इसलाम के अनुयायियों को एक साथ चेताया और कहा कि 'नाथ' शब्द रटने से कोई बंधनमुक्त नहीं हो सकता, 'गोरख' का नाम लेने से आध्यात्मिक तत्त्व की प्राप्ति नहीं हो सकती, इसी प्रकार 'कलमा' के उच्चारण मात्र से काम नहीं चल सकता, अपितु उससे अंतर्जीवन का मर्म प्रकाशित करना चाहिए। मुहम्मद साहब द्वारा प्राकट्य किया गया कलमा दिव्य शक्ति प्रदाता, आध्यात्मिक जीवनदाता, पवित्र वचन है। कलमा अमर है, अक्षुण्ण है और परमात्मतत्त्व का प्रकाशक है—

नाथ कहंतां सब जग नाथ्या गोरश कहता गोइ।
कलमा का गुर महंमद होता पहलैं मूवा सोइ॥

गोरखनाथ ने हिंदू-मुसलमान सभी को योग-मार्ग पर एक साथ चलने का उपदेश दिया। हिंदुओं, योगियों, पीरों, काजियों, मुल्लाओं को कहा कि सभी उस योग-मार्ग पर चलो और योग साधना करो, जिसको ब्रह्मा, विष्णु एवं महादेव ने भी अपनाया।

उतपति हिंदु जरणां जोगी अकलि पीर मुसलमानी।
ते राह चीन्हों हो काजी मुलां ब्रह्मा, बिस्न, महादेव मानी॥

गोरखनाथ ने हिंदू-मुसलिम एकता का एकाकर रूप योग एवं योगी में प्रस्तुत करते हुए कहा कि हिंदू अपने भगवान् को मंदिर में खोजता है, जबकि मुसलमान मसजिद में। परंतु योगी के लिए यह परम पद सर्वत्र है। मंदिर-मसजिद सब जगह उसे परमात्मा का सहज बोध सुलभ होता है। राम और खुदा घर-घर में व्याप्त हैं।

हिंदू ध्यावै देहुरा मुसलमान मसीत।
जोगी ध्यावै परम पद जहां देहुरा न मसीत॥
हिंदू आर्श अलश कौं तहाँ राम अछै न शुदाइ॥

गोरखनाथ ने धर्मग्रंथों पर अपनी दृष्टि साफ करते हुए कहा कि काज़ी और मुल्ला 'कुरान' को मानते है, मंत्रद्रष्टा ब्रह्मज्ञानी 'वेदों' को तथा कापड़ी और संन्यासी 'तीर्थ यात्रा' को। जबकि परमपद मात्र पुस्तक-ज्ञान एवं तीर्थ-भ्रमण से नहीं, अपितु साधना से मिलता है।

काजी मुलां कुराणं लगाया, ब्रह्म लगाया वेदं।
कापड़ी संन्यासी तीरथ भ्रमाया न पाया नश्बांण पद का भेवं॥

हिंदू-मुसलिम एकता या यों कहें सभी को एक समान मार्ग पर चलने का उपदेश नाथ पंथ की पूरी योग-परंपरा में प्राप्त होता है। नाथ पंथ की योग-परंपरा सगुण-निर्गुण सभी प्रकार की उपासना पद्धतियों का समवेत स्वर है। यही समवेत् स्वर सूफी परंपरा में प्रतिबिंबित हुआ। भारत में सूफी मत नाथ पंथ की इसी हिंदू-मुसलिम एकता के विचार-दर्शन का प्रतिफलन है।

□

श्री गोरखपीठ के महंत से मगहर में मिले थे गुरु गोविंद सिंह

नाथ पंथ का जादू सिर चढ़कर बोल रहा था। भारत का कोई ऐसा कोना नहीं, जहाँ नाथ पंथ के योगियों की धूनी न जली हो। गोरखनाथ के बाद कोई ऐसा महात्मा नहीं, जिसे नाथ पंथ के योग ने प्रभावित न किया हो, कोई ऐसा पंथ नहीं, जो नाथ पंथ की धूनी के धुएँ से आच्छादित न हुआ हो। सिख एवं खालसा पंथ भी इससे अछूते न रहे।

गोरखपुर से लगभग 22 किमी. दूर लखनऊ मार्ग पर मगहर में संत कबीर ने अपनी धूनी रमाई। मान्यता है कि कबीर की तपस्थली पर महायोगी गोरखनाथ के प्रतिनिधि श्री गोरखपीठ के महंत के साथ संत कबीर, संत रविदास, संत केसरदास तथा गुरुनानक देव का समागम हुआ था। इस समागम में अन्य संत भी जुटे। तत्काल नवाब द्वारा यहाँ भंडारे की व्यवस्था की गई थी, किंतु पानी की व्यवस्था नहीं हो पाई। तब श्री गोरक्षपीठ के महंत ने जमीन पर अँगूठे से दबाकर तलैया उत्पन्न कर दी, और जल स्रोत फूट पड़ा। वह तलैया गोरख तलैया के नाम से आज भी जानी जाती है। इस प्रकार लोकमान्यता नानकदेव और श्री गोरखपीठ के महंत के सम्मिलन को सूचित करती है। साहित्य, पांथिक स्वरूप और विचार-दर्शन भी बताते हैं कि सिख पंथ-खालसा पंथ पर नाथ पंथ का जबरदस्त प्रभाव था।

सिख पंथ-खालसा पंथ में गुरु परंपरा नाथ पंथ की गुरु-शिष्य परंपरा की याद दिलाती है। गुरु की जो महिमा नाथ पंथ ने स्थापित की, सिख पंथ-खालसा पंथ में गुरु को वही प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। सिख पंथ या नानक पंथ के प्रवर्तक गुरु नानकदेव ने 'गोरखहटड़ी' में नाथयोगियों से ज्ञान-चर्चा की थी। स्पष्ट है कि उस चर्चा स्थान को गोरखनाथ के नाम से जाना गया। गुरु नानकदेव ने गोरखनाथ के शिष्य 'लोहारीया' और 'चरपट' का उल्लेख किया है। उन्होंने 'अजपा जप, अनाहत नाद, षटकर्म, निरंजन, नाद-बिन्दु, सहज, शून्य इत्यादि नाथयोग में प्रचलित पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया है। नाथ योगियों से जो ज्ञान-चर्चा उन्होंने की है, वह 'सिद्ध-गोष्ठी' के रूप में विख्यात है। स्पष्ट है कि उन्होंने नाथयोग की अनेक तात्त्विक बातों को अपने सिख-मत में पचा लिया। योग साधना का तात्त्विक रूप सभी सिख गुरुओं को स्वीकार्य रहा है। सिखों के अंतिम गुरु गोविंद सिंह कहते हैं कि हे मन! ऐसा योग करो, जिसमें बाहरी दिखावे की आवश्यकता न हो—

रे मन! इहि विधि जोगु कमाऊ।
सिंगी साँच अकपट कण्ठला, धियान विभूति चढ़ाऊ॥
ताती गहु आतम बसि करि कै भिच्छानाम अधारं।
बाजे परमतार ततु हरि को उपजे राग रसारं॥

यह शैली एवं विषय-वस्तु नाथ पंथ की है। सिख-गुरुओं तथा पंजाबी साहित्य पर नाथ पंथी साहित्य का असर स्वाभाविक रूप से दिखता है। गुरुवाणी मे अनेकश: गोरखनाथ की सबदियों का प्रभाव है।

नाथ पंथ का सिख एवं खालसा पंथ पर प्रभाव का ही परिणाम था कि गुजरात-महाराष्ट्र की तरह पंजाब भी नाथ पंथी योगियों का गढ़ बना रहा। महायोगी गुरु गोरखनाथ की आज भी पंजाबी समाज में बड़ी प्रतिष्ठा है। गोरखपुर में श्री गोरखनाथ मंदिर के साथ पंजाबी समाज का रिश्ता इसी प्रभाव का सूचक है।

□

स्वतंत्रता संग्राम के संत सिपाही

बंकिमचंद चटर्जी के 'वंदेमातरम्' से समाज को पहली बार यह ध्यान में आया कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में संन्यासी भी योद्धा बनकर उतरे। सत्य-अहिंसा के पुजारियों ने विदेशी सत्ता के विरुद्ध हथियार उठाया, किंतु यह बहुत कम लोग जानते हैं कि ये संन्यासी कौन थे? यह तो और अज्ञात है कि इससे कई शताब्दियों पूर्व अपने स्थापना काल से नाथ पंथ के योगियों ने देश रक्षा में युद्ध को अपने धर्म का अभिन्न हिस्सा माना। अलख निरंजन के उद्घोषक मुक्ति के लिए योग एवं आध्यात्मिक साधना में लीन, शांति-प्रेम-अहिंसा के पक्षधर नाथ पंथ के संत समाज-राष्ट्र रक्षा के लिए संग्राम का भी उद्घोष करते रहे तथा संग्राम करते रहे। नाथ पंथ के योगियों ने समय-समय पर संत एवं सैनिक की भूमिका में साधना और संग्राम को एक साथ साधा तथा योगियों, साधुओं एवं संन्यासियों को संदेश दिया कि जब भी धर्म, समाज तथा राष्ट्र खतरे में हो, तो गुफाओं, मठों, मंदिरों की साधना के साथ-साथ स्वतंत्रता संघर्ष का नेतृत्व करना भी धर्म है।

देश-रक्षा के लिए विदेशी अरब आक्रमणकारियों के विरुद्ध उदयपुर की पहाड़ी पर जुटे संन्यासियों को गोरखनाथ ने योग-साधना और देश-रक्षा, दोनों का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि राष्ट्र-रक्षा में युद्ध भी योग है। विदेशी आक्रमणकारियों से लड़ने हेतु गोरखनाथ ने प्रत्येक घर से एक-एक नवयुवक को योगी सेना में आने का आह्वान किया। जब तुर्क सुल्तान अलाउद्दीन

खिलजी का अत्याचार बढ़ रहा था, उसकी निरंकुश सत्ता का अट्टहास सुनाई पड़ रहा था, चित्तौड़ में रानी पद्मिनी का जौहर हो चुका था। इस युग में नाथ पंथ के योगी चर्पटनाथ ने योगी समूह का सैन्यीकरण किया। तुर्कों ने गोरखनाथ मंदिर पर आक्रमण किया और युद्ध में नाथ पंथी संन्यासियों ने रक्त तर्पण किया। गोरखनाथ मंदिर की रक्षा हुई और उसका नव-निर्माण किया गया।

तुर्क शासक रजिया सुल्तान के अत्याचारों के विरुद्ध नाथ पंथ के योगी रावलपीर ने जनता को उपदेश दिया कि जन के न्याय और अधिकार के लिए लड़ना धर्म है। रावलपीर ने तत्कालीन विदेशी आक्रांताओं के अत्याचार के विरुद्ध जनता को जागरूक करते हुए कहा था कि बर्बरता जब दो जातियों के संघर्ष में खुलकर तांडव नृत्य करती है, तब प्राय: मृदु और उदार संस्कारों वाली जाति पराजित होती है। तुर्कों की विजय के पीछे इस अमानवीय बर्बरता का हाथ है। भारत की पराजय कौम की पराजय नहीं एक परिष्कृत मानवता की पराजय है। अत: मानवता की रक्षा के लिए संघर्ष करो। ऐसे समय जब राष्ट्र संकट में हो, मानवता कलंकित हो रही हो तो अहिंसा की माला जपना समस्या का गलत समाधान कहलाता है। नम्र बनो अच्छा है, पर अपनी रक्षा में समर्थ बनना ज्यादा जरूरी है। इसी रावलपीर की स्मृति रावलपिंडी में सुरक्षित है।

नाथ पंथी योगियों की राष्ट्र रक्षा में सैनिक-साधना संत ज्ञानेश्वर, नामदेव, तुकाराम और समर्थ गुरु रामदास तक होते हुए शिवाजी के रूप में प्रकट हुई। संत ज्ञानेश्वर को नाथ पंथी सैनिक-साधना गोरखनाथ से गहनीनाथ एवं निवृत्तिनाथ से होते हुए प्राप्त हुई थी। मध्ययुगीन भारत में नाथ पंथ के योगियों ने विदेशी आक्रांताओं का न केवल सैन्य प्रतिरोध किया, अपितु भारत की सांस्कृतिक-आध्यात्मिक थाती को बचाए रखा।

1857 के स्वातंत्र्य समर में भी नाथ पंथी योगियों की भूमिका अत्यंत महत्त्व की थी। उत्तर भारत के इस स्वातंत्र्य संग्राम में गाँव-गाँव सारंगी लिये भरथरी के गीत गाते नाथ पंथी योगी सूचना-तंत्र की महत्त्वपूर्ण कड़ी थे। संग्राम के प्रतीक रोटी और कमल एक गाँव से दूसरे गाँव ले जानेवाले नाथ पंथ के योगियों ने

स्वतंत्रता संग्राम को संगठित रूप से लड़ने में अपनी अद्वितीय भूमिका निभाई। सुभद्राकुमारी चौहान की जन-जन में प्रिय कविता 'बुंदेले हर बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी—खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' में 'बुंदेले हर बोले' अलख-निरंजन, हर-हर महादेव बोलनेवाले नाथ पंथी योगी ही हैं, जो स्वातंत्र्य समर के गीत गाकर भारत की स्वाधीनता का स्वप्न दिखाते थे।

1855 से 1880 ई. तक गोरखनाथ मंदिर के महंत गोपालनाथजी भारत के स्वतंत्रता संग्राम एवं संन्यासी सेना के प्रमुख सिपाही थे। 'वंदेमातरम्' के संन्यासी सैनिकों में सम्मिलित महंत गोपालनाथजी को ब्रिटिश सरकार द्वारा कई बार आरोपित किया गया। अंग्रेज शासकों की वे रडार पर थे। योगीराज बाबा गंभीरनाथ स्वाधीनता के लिए लड़ रहे क्रांतिकारियों के मार्गदर्शक थे। श्री गोरखनाथ मंदिर पूर्वी उत्तर प्रदेश में क्रांतिकारियों के आश्रय पाने का प्रमुख स्थान था। इन्हीं परिस्थितियों में महंत दिग्विजयनाथजी स्वाधीनता संग्राम के सिपाही बने। वे प्रसिद्ध चौरी-चौरा कांड में मुख्य आरोपी थे। महामना मदन मोहन मालवीय की पैरवी से वे फाँसी की सजा से बच पाए।

नाथ पंथ की संन्यासी परंपरा में स्व-मुक्ति से महत्त्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण एवं राष्ट्र-रक्षा का प्रश्न रहा है। यह संन्यासी परंपरा सामाजिक एकता एवं राष्ट्रीय सुरक्षा में समर्पित रही है। संत एवं सैनिक के समन्वयकारी प्रवृत्ति के साथ विकसित नाथ पंथ की योग-प्रधान पांथिक परंपरा ने सदैव राष्ट्रीयता को सर्वोपरि माना। इन्होंने वाममार्गियों को उखाड़ा, समाज में भेदभाव, बाह्याचार, आडंबर, पांडित्याभिमान और पदसोपान क्रमवाली सामाजिक संरचना और जाति-पाँति के आग्रहों के विरुद्ध एक चेतना फैलाई तथा आक्रांताओं-आततायियों के विरुद्ध जनांदोलन एवं संघर्ष का नेतृत्व किया, अखाड़ों की स्थापना की तथा आवश्यकता पड़ने पर देश रक्षा हेतु संन्यासियों को सेनानी बनाया।

□

महंत परंपरा में महायोगी गोरखनाथ की अमरता का संदेश

लोक जीवन का पारमार्थिक स्तर उत्तरोत्तर उन्नत और समृद्ध कर निष्पक्ष आध्यात्मिक क्रांति का बीजारोपण कर योगकल्पतरु की शीतल छाया में त्रयताप से पीड़ित मानवता को मुक्ति की राह दिखानेवाले महायोगी गोरखनाथ नाथ पंथ की परंपरा में अयोनिज, अमरकाय सिद्ध माने जाते हैं। नाथ पंथ में मान्यता है कि गोरखनाथ सतयुग में पेशावर, त्रेतायुग में गोरखपुर, द्वापर में हरमुज (द्वारिका) तथा कलयुग में गोरखमढ़ी में आविर्भूत हुए थे। इस पांथिक परंपरा को आस्था-विश्वास मानकर छोड़ दें तो भी श्री गोरखनाथ मंदिर की महंत परंपरा महायोगी को अमर बनाए हुए है।

महायोगी गोरखनाथ ने राप्ती के तट पर सुरम्य वन-प्रदेश में जहाँ धूनी रमाई और अखंड दीप प्रज्वलित किया, वहीं आज श्री गोरखनाथ का भव्य मंदिर विराजमान है। श्री गोरखनाथ मंदिर के पार्श्व में श्री गोरखनाथजी की प्रतिष्ठित पीठ है। श्री गोरखपीठ के आद्य पीठाधीश्वर श्री गोरखनाथजी थे। अखंड दीप एवं अखंड धूने के साथ ही श्री गोरखपीठ के पीठाधीश्वर की अखंड परंपरा भी श्री गोरखपीठ में विद्यमान है। यह पीठ नाथ पंथी योगियों की सर्वोच्च साधना की पीठ है, उनकी आस्था की पीठ है, दिशा-निर्देशन एवं मार्गदर्शक पीठ है। नाथ पंथ के योगियों की मान्यता है कि श्री गोरखपीठ

का पीठाधीश्वर साक्षात् महायोगी गोरखनाथ का प्रतिनिधि स्वरूप होता है। नाथपंथ के योगी एवं भक्त पीठाधीश्वर रूप में गुरु श्री गोरखनाथ का वे दर्शन करते है। गुरु श्री गोरखनाथ का यह प्रतीकात्मक साकार रूप है। परिणामत: श्री गोरखपीठ के पीठाधीश्वर के आदेश को नाथ पंथ के योगी महायोगी गोरखनाथ का आदेश मानते हैं। दुनियाभर में नाथ पंथ के मंदिरों का पुजारी अथवा महंत होने के लिए श्री गोरखनाथ मंदिर में स्थित श्री गोरखपीठ के पीठाधिपति की अनुमति आवश्यक होती है।

श्री गोरखपीठ के महंत का स्थान नाथ पंथ में सर्वोच्च एवं पूज्य है। श्री गोरखपीठ की महंत परंपरा में विलक्षण साधनावाले योगी हुए हैं। यहाँ के महंत अपने आध्यात्मिक ज्ञान, असाधारण योग शक्ति, सेवा और लोककल्याण के नाते विख्यात हैं। प्रारंभिक महंतों की क्रमबद्ध-कालबद्ध जानकारी उपलब्ध नहीं है। सन् 1758 से 1786 ई. तक महंत रहे बाबा बालकनाथ के अलौकिक जीवन के प्रेरणास्पद उल्लेख मिलते हैं। तत्पश्चात् महंत मनसानाथ (1786-1811 ई.), महंत संतोषनाथ (1811-1831 ई.), महंत मेहरनाथ (1831-1855 ई.) महंत गोपालनाथ (1855-1880 ई.), महंत बलभद्रनाथ (1880-1889 ई.), महंत दिलवरनाथ (1889-1896 ई.), महंत सुंदरनाथ (1896-1924 ई.), महंत ब्रह्मनाथ (1924-1935 ई.), महंत दिग्विजयनाथ (1935-1969 ई.), महंत अवेद्यनाथ (1969-2014 ई.) श्री गोरखपीठ के पीठाधीश्वर हुए। 2014 ई. से महंत योगी आदित्यनाथजी इस पीठ के पीठाधीश्वर हैं।

श्री गोरखपीठ की महंत परंपरा में योगीराज बाबा गंभीरनाथ एक ऐसा नाम है, जो महंत पद पर अभिषिक्त न होते हुए भी श्री गोरखपीठ की महंत-परंपरा में समादृत हैं। 1896 ई. में महंत दिलवरनाथजी ब्रह्मलीन होने पर बाबा गंभीरनाथजी ने महंत पद पर स्वयं अभिषिक्त होने की बजाय सुंदरनाथजी को महंत पद पर अभिषिक्त कराया तथा ब्रह्मलीन होने तक स्वयं श्री गोरखपीठ का संरक्षण करते रहे।

योगीराज बाबा गंभीरनाथजी असाधारण योगी थे। परकाया प्रवेश एवं

मृत्यु को टाल देने की उनकी क्षमता प्रत्यक्षदर्शी गोरखपुर से लेकर बंगाल तक उनके अनेक भक्त रहे हैं। योगिराज बाबा गंभीरनाथ ने दिग्विजयनाथजी को 14 वर्ष की अवस्था में पुनर्जीवन प्रदान किया था।

अटल बिहारी गुप्त की बाँग्ला पुस्तक 'मृत्यु और पुनर्जन्म' में उल्लेख है कि एक बार अटल बिहारी गुप्त और राजकीय विद्यालय (जुबली इंटर कॉलेज) के प्रधानाचार्य राय साहब अघोरनाथ बाबा गंभीरनाथजी के पास बैठे थे। नगर की एक सभ्रांत विधवा महिला का बेटा लंदन में लॉ की पढ़ाई कर रहा था। उसका कोई समाचार न मिलने से वह विधवा बाबा से उसकी रक्षा की प्रार्थना कर फूट-फूटकर रोने लगी। बाबा गंभीरनाथ अपनी कोठरी में चले गए। आधे घंटे बाद आए और बताया कि तुम्हारा बेटा घर आ रहा है, वह सोमवार को आ जाएगा। उसका बेटा राय साहब अघोरनाथ का शिष्य था। अगले बुधवार को वह राय साहब से मिलने पहुँचा और बताया कि वह सोमवार को गोरखपुर पहुँचा है। राय साहब और अटल बिहारी गुप्त उस युवा बैरिस्टर को लेकर गंभीरनाथजी के पास गए। बाबा को देखते ही उस युवा ने पूछा, "बाबा आप कब गोरखपुर आए?" उस युवा ने बताया कि बाबा गंभीरनाथ से उसकी भेंट पानी के जहाज पर उसी दिन, उसी समय हुई थी जब बाबा आधे घंटे अपनी कोठरी में बंद थे। यद्यपि यह बात गंभीरनाथजी ने नहीं स्वीकार की। श्री गोरखपीठ के सभी महंत अपनी यौगिक साधना के बल पर विस्मृत करनेवाली क्षमता रखते हैं यद्यपि वे अपनी क्षमता को प्रदर्शित नहीं करते, प्रयत्नपूर्वक गोपनीय रखते हैं। कभी-कभी भक्तों के हित तथा लोक-कल्याण के प्रश्न पर उनकी अलौकिक क्षमता दिख जाती है।

□

नेपाल के राजगुरु हैं गोरखनाथ

समस्त नेपाल में नाथ पंथ को अप्रतिम सम्मान प्राप्त हैं। मान्यता है कि नेपाल में महायोगी गोरखनाथ के आशीर्वाद से ही शाह राजवंश की स्थापना हुई। नेपाल में यशोवर्मा के तीन पुत्रों में सबसे छोटे पुत्र द्रव्यशाह गौ सेवा में लगे रहते थे। तरुण योगी के रूप में गोरखनाथजी से उनकी भेंट हुई। द्रव्यशाह के अतिथि सत्कार से प्रसन्न गोरखनाथजी ने उनके वंश को नेपाल के शासक होने का आशीर्वाद दिया। द्रव्यशाह के पुत्र रामशाह तथा इस वंश के प्रतापी शासक पृथ्वीनारायण शाह पर गोरखनाथजी की अहेतुक कृपा बनी रही। कहा जाता है गोरखनाथजी ने पृथ्वीनारायण शाह को एक तलवार भेंट की थी। नेपाल नरेश पृथ्वीनारायण शाह गोरखनाथजी के आशीर्वाद से ही 24 परगने में विभाजित नेपाल को एक राज्य के झंडे के नीचे समाहित कर पाए और ऐसे नेपाल राष्ट्र की स्थापना की, जो ब्रिटिश युग में भी स्वतंत्र रहा। उल्लेख मिलता है कि लंबजुंग के राजा मानसिंह के साथ निर्णायक युद्ध से पूर्व पृथ्वीनारायण शाह ने श्री गुरु गोरखनाथजी की पूजा की तथा एक राजाज्ञा के द्वारा श्री गोरखनाथजी को अपने राज्य का प्रमुख संरक्षक घोषित किया। उन्हें विजय प्राप्त हुई। इस राजवंश का नाम श्री गोरखशाह वंश पड़ा, जो बाद में शाहवंश से जाना जाने लगा।

नेपाल का शाह राजवंश यह मानता है कि उनका राजवंश महायोगी गोरखनाथ की कृपा से ही नेपाल पर शासन करता रहा। शाह वंश के सभी

राजाओं ने गोरखनाथजी को अपना इष्टदेव स्वीकार किया है। नेपाल में विभिन्न स्थानों पर गोरखशाह वंश के राजाओं ने श्री गोरखनाथजी एवं श्री मत्स्येंद्रनाथजी के मठ-मंदिर बनवाए। गोरखनाथ को नेपाल में राष्ट्रगुरु के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। नेपाल के सिक्कों पर गोरखनाथजी की चरण पादुकाओं का चिह्न तथा 'श्री गोरखनाथ' अंकित रहता है। जब तक नेपाल में राजवंश कायम था, शाह वंश के राजाओं का राजतिलक नेपाल में गोरखनाथ की तपोभूमि मृगस्थली के महंत द्वारा ही संपन्न होता था। नेपाल के राजपरिवार की खिचड़ी आज भी श्री गोरखनाथ मंदिर में मकर संक्रांति के दिन चढ़ती है।

नेपाल में महायोगी गोरखनाथ के गुरु मत्स्येंद्रनाथ का भी उतना ही सम्मान है जितना गोरखनाथ का। नेपाल परंपरा में कहा जाता है कि नेपाल नरेश नरेंद्र देव के शासनकाल में जनता के उत्पीड़न से नाराज श्री गोरखनाथजी मेघमालाओं को बाँधकर मृगस्थली में बैठ गए। 12 वर्ष तक लगातार अनावृष्टि से भयंकर अकाल पड़ा। जब नेपाल नरेश नरेंद्र देव को यह बात पता चली तो उन्होंने मत्स्येंद्रनाथ से प्रार्थना की कि वे गोरखनाथजी को मनाएँ। नेपाल नरेश के निवेदन पर मत्स्येंद्रनाथजी मृगस्थली पहुँचे। गुरु के सम्मान में गोरखनाथजी खड़े हुए, मेघमालाएँ मुक्त हुईं और बारिश से नेपाल पुन: हरा-भरा हुआ। नेपाल नरेश नरेंद्र देव ने मत्स्येंद्रनाथजी के सम्मान में मत्स्येंद्रनाथ नामांकित मुद्रा चलाई तथा रथ-यात्रा, महास्नान यात्रा उत्सव आरंभ किया। यह यात्रा आज भी नेपाल में बड़े ही उत्सवपूर्वक निकाली जाती है। मत्स्येंद्रनाजी के सम्मान में चलाई गई मुद्राओं पर 'श्री लोकनाथाय', 'श्री लोकनाथ:', 'श्री करुणामय:' लेख श्री उत्कीर्ण मिलता है।

नेपाल में गोरखनाथजी शिवगोरक्ष के रूप में पूज्य हैं। मान्यता है कि नेपाल का विश्वप्रसिद्ध श्री पशुपतिनाथजी का मंदिर 'शिवगोरक्ष' का ही मंदिर है। उन्होंने अपनी साधना और तपस्या से नेपाली जन-जीवन को प्रभावित किया। वागमती नदी के तट पर स्थित सिद्धांचल के मृगस्थली में गोरखनाथजी ने तप किया था, जहाँ मंदिर में उनकी मूर्ति प्रतिष्ठित है। नेपाल के एक प्रखंड

दांग के राजकुमार रतन परीक्षित को गोरखनाथ ने नाथयोग में दीक्षित किया था। सिद्ध रतननाथ के प्रसिद्ध मठ में श्री गोरखनाथजी एवं श्री भैरवनाथजी की विशेष रूप से पूजा होती है। पिउठाना तथा पश्चिमी नेपाल और तिब्बत-चीन की सीमा पर स्थित मुक्तिनाथ को योगी गोरखनाथ मानते हैं।

नेपाल का गोरखा राज्य एवं गोरखा जाति महायोगी गोरखनाथ से अपना संबंध जोड़ती हैं। नेपाल की सेनाएँ युद्ध भूमि में 'जय-गोरख' रणघोष करते हुए युद्ध के लिए प्रस्थान करती हैं। ब्रिटिश युग में द्वितीय विश्वयुद्ध के समय सेना की गोरखा रेजीमेंट की बहादुरी से प्रभावित होकर अंग्रेज गवर्नर श्री गोरखनाथ मंदिर में आए और महंत दिग्विजयनाथजी से आभार निवेदित किया।

नेपाल की जनता के बीच महायोगी गोरखनाथ की आज भी वही प्रतिष्ठा है। आम नेपाली नागरिक गोरखनाथजी को अपना राष्ट्र गुरु मानता है। शिवावतार महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ नेपाल के प्रतिपालक संत हैं। नाथ पंथ के प्रति यहाँ की जनता के मन में अगाध श्रद्धा है। महायोगी गोरखनाथ का सूत्र पकड़कर भारत-नेपाल के मैत्री संबंधों को मजबूत किया जा सकता है। श्री गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर की इसमें बड़ी भूमिका हो सकती है।

□□□